नीड़

9 जनवरी, 1994

पल्लव को समर्पित अलूम्नी का प्रकाशन

With best compliments from

Dr. Raghvendra Singh Gupta

Batch - 1967

वातावरण में घुल रही थी
चांदी
अचानक सांझ हो गई
मुझे याद आया मेरा अपना
नीड़
और घड़ा.
याद आये वे तिनके
माता - पिता ने इकट्ठे किये थे
दूर दूर से
बड़े परिश्रम से बीने थे
और
नरम नरम बिस्तर,
एक आशियां बनाने,
मैं फिर आऊँगा नये साथियों
फिर आऊँगा नये साथियों
मैं फिर - - - - - - - - - -

- नवल

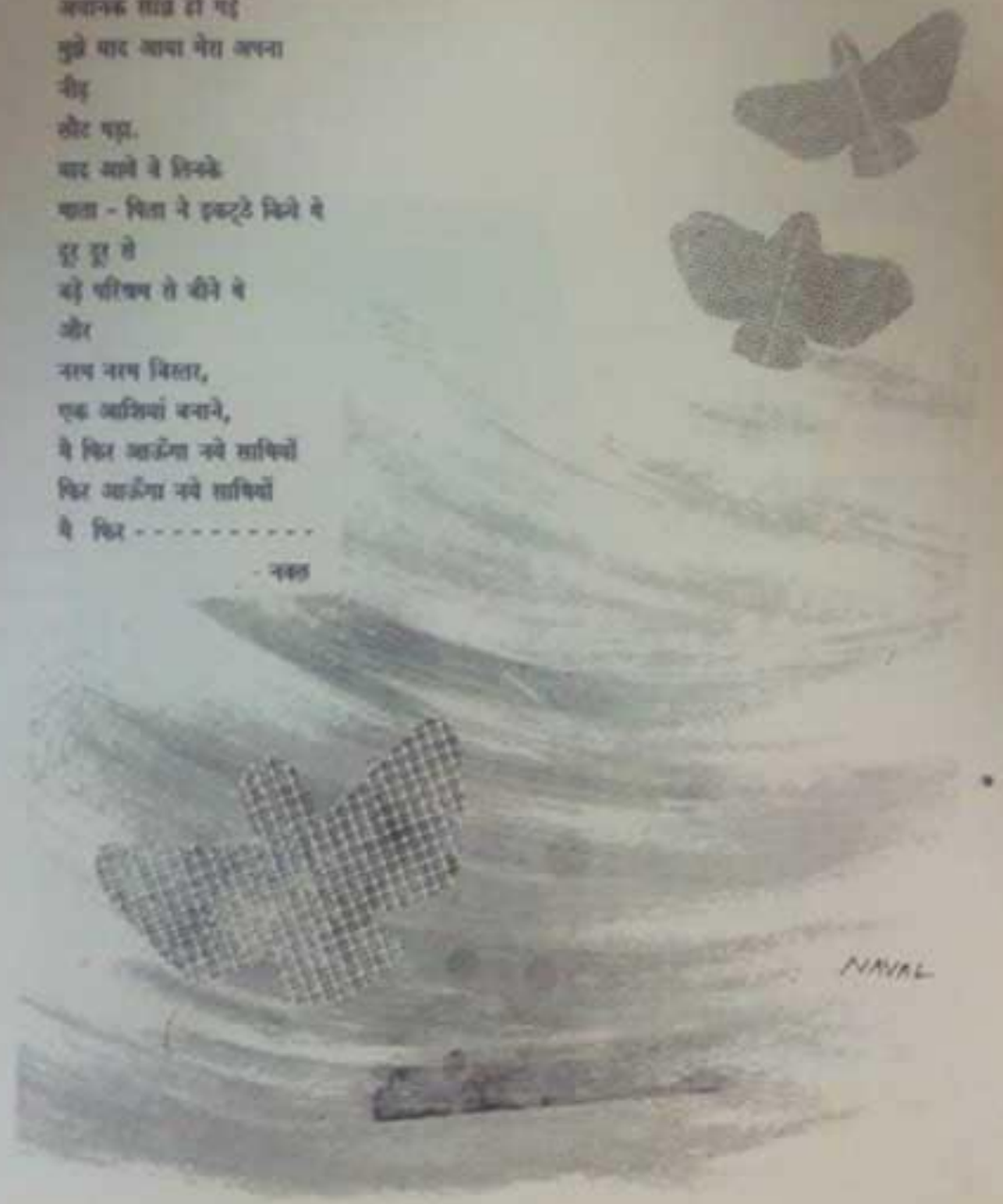

हम
समर्पित करते हैं
इस स्मारिका
"नीड़"
को
श्रद्धांजली स्वरूप
उन्हें जो
असमय ही हमें
छोड़कर
चले गये,
उनकी
मधुर स्मृतियाँ
हमारे साथ हैं

- नवल

अलुम्नी परिवार

राष्ट्रपति
भारत गणतंत्र
PRESIDENT
REPUBLIC OF INDIA

MESSAGE

I am happy to learn that the Alumni of the Gandhi Medical College, Bhopal are organising a get-together of all the ex-students.

It is a matter of great satisfaction to me that this Institution which was established at Bhopal in 1955, during my Chief Ministership, has produced many dedicated doctors, surgeons and other experts who have rendered creditable service to the nation and have made their mark in various branches of medicine.

I have many warm memories of my association with the College, dating back to its inception and of how various difficulties were resolved in its early years and would like to convey my good wishes to the ex-students. I send my greetings to all those who entered the portals of this Medical College to dedicate themselves to the service of humanity.

S. D. Sharma
(SHANKER DAYAL SHARMA)

New Delhi,
November 11, 1992.

राज भवन,
भोपाल—४६२००३

अगस्त 29, 1993

संदेश

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि "अल्युम्नि आफ गांधी मेडिकल कालेज, भोपाल" का वार्षिक अधिवेशन आयोजित किया जा रहा है और इस अवसर पर एक स्मारिका प्रकाशित की जा रही है।

चिकित्सा क्षेत्र में गांधी चिकित्सा महाविद्यालय, भोपाल से शिक्षित छात्रों का महत्वपूर्ण योगदान है। इस महाविद्यालय के छात्रों ने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर शोहरत हासिल कर निश्चित ही इस महाविद्यालय और प्रदेश का गौरव बढ़ाया है। महाविद्यालय के पूर्व छात्रों को संगठित कर उनमें परस्पर भाईचारे की भावना को बढ़ावा देने के उद्देश्य से इस अधिवेशन का आयोजन स्वागतयोग्य है।

संगठन के प्रथम वार्षिक अधिवेशन की सफलता के लिये शुभकामनायें।

म. शफी कुरैशी
(मोहम्मद शफी कुरैशी)

Dear Brothers & Sisters,

A copy of souvenir is in your hands. I am aware you must be having lot of expectations and probably we could not fulfil your expectations. It is simply because our 'Alumni' is passing through developmental phases of " बीजारोपण " to " अंकुर " to " पल्लव ", details of which you shall find in the Secretary's report. In such invisible to visible transformation you can understand, if so happens. But we have some satisfaction in atleast one sense, that, we could prepare a " नीड़ " for our brothers and sisters and are presenting to you. It is for all of you and future generations to nourish, develope, make it useful and glorify, befitting to the name of our Alma mater. It can only be done by your active indulgence.

We the members of souvenir committee are grateful to our various donors, advertisers and alumni brothers and sisters, who have extended help in bringing out this issue of souvenir.

With love and affection,

Dr.S.S.Yesikar
Chairman, Souvenir Committee

CONVENER
Dr.N.D.GARGAVA
PRESIDENT
Dr.B.P.DUBEY
VICE- PRESIDENT
Dr.C.C.CHAUBAL
Dr.S.K.SAXENA
SECRETARY
Dr.A.K.SHRIVASTAVA
JT. SECRETARY
Dr.GURUDUTT TIWARI
TREASURER
Dr.B.G.MAHAJAN
EXECUTIVE MEMBER
Dr.L.P.SINGH
Dr.(MRS.)S.GOVILA
Dr.S.A.S.KAZMI
Dr.NADE ALI SHAH
Dr.Y.R.SHARMA
BOARD OF ADVISORS
Dr.S.C.JAIN
Dr.B.M.DHOOT
Dr.K.N.SHARMA
Dr.S.A.ANSARI
Dr.M.M.GUPTA
Dr.U.C.TIWARI
Dr.S.S.YESHIKAR
Dr.P.RAJANI
Dr.H.H.TRIVEDI
Dr.R.S.VERMA
P.R.O.
AEJAZ SHERIFF

कला निर्देशन : पल्लव
आकल्पन : नीड़
नवल जायसवाल

अक्षर संयोजन
माधव गोरे, जोविका ग्राफिक्स, भोपाल
मुद्रण
महेन्द्र गगन, प्रियंका ऑफसेट, भोपाल

स्मृतियों के द्वार जब खुल जाते हैं तो फिर कोई नहीं रहता अजनबी । दूर तक है होता सिर्फ एक उजाला और तब ढेर सी यादें चलचित्र होकर स्मृति पटल पर तैरने लगती हैं । पलकें मूँद कर खो जाता हूँ मैं उस चिरपरिचित संसार में जहाँ उन पलों में जो हम सबने इसी जगह गुजारे, जहाँ आज हम इकट्ठे होने आ रहे हैं, स्वागत है आप सबका ।

अपने वर्तमान को लिये अपने अतीत से जुड़ने की एक आकांक्षा है "पल्लव" । यह महज एक प्रयास नहीं, पुनर्मिलन की एक सार्थक पहल है ।

इस पल्लव में है कुछ आशीर्वाद, कुछ शुभकामनायें, कुछ अतीत, कुछ नया कलेवर, कुछ उन सुखद अनुभवों का संग्रह जो आपको उन स्वर्णिम दिनों की याद दिलायेगा, जिन्हें हम आप कभी भूलना नहीं चाहेंगे ।

इन्हीं संभावनाओं के साथ ।

डॉ. चन्द्रहास शर्मा

आभार
अधिष्ठाता, गांधी चिकित्सा महाविद्यालय, भोपाल
डॉ. महेश दीक्षित
डॉ. धनंजय शर्मा
डॉ. आई. के. चुग
श्री महेन्द्र गौर
श्रीमती राजलक्ष्मी भार्गव
कुमारी गीता भार्गव
श्री रवि वर्मा
श्री [illegible]
श्री टी. एस. मिश्रा
श्री रवि [illegible]
श्री एन. स्वामीनाथन
श्री तौसीफ अहमद
श्री आई. एस. राव, आई.ए.एस.
श्री ए. के. सिंह, आई.ए.एस.
श्री एम.एस. मूर्ति, आई.ए.एस.
श्री आर. पी. सिंह, अधीक्षण यंत्री
श्री आर.आर. कटोलिया, मुख्य अभियंता, राज्य बीज एवं फार्म विकास निगम
श्री ओ.पी. कविराज, नेशनल फर्टिलाइजर
[illegible]

[illegible] माइक्रो लैब लिमिटेड, इन्दौर

कलम ने जब भी अपनी रोशनाई कागज़ों पर बिखेरी है कुछ न कुछ हुआ है । इन्कलाब का आह्वान हुआ, कभी याद का स्वर आया तो कभी प्रेमिका को सन्देश भेजे गये, किसी ने विरुदावली गायी तो किसी ने मन जीत लिया, महाभारत और रामायण जैसे महाकाव्यों की रचना साकार हुई । आज कालिदास की इस भूमि पर एक पड़ाव है "पल्लव", अलुम्नी का पहला सम्मेलन, हमारी अपनी संस्था गांधी चिकित्सा महाविद्यालय का एक अनूठा और अभूतपूर्व कार्यक्रम "पल्लव" ।

आज कुछ ऐसे शब्दों की आवश्यकता आ गई है जिनके द्वारा मानवता को प्रस्फुटित किया जा सके, चिकित्सक समुदाय को सहिष्णुता से सराबोर किया जा सके और आत्मीयता के अर्थों को नये सिरे से जाना जाय । इसी सोच की प्रक्रिया का ही फल आज आपको भेंट में देना चाहता हूँ । आकाश पर ले जा कर इसे समर्पित करना चाहता हूँ, समूचे संसार को, पर्यावरण को योग-क्षेम जैसे प्रतीक के रूप में और चाहता हूँ यह हम सब के बीच में निरन्तर रहे ।

हम सब यहाँ आये, मैं सब का आभारी हूँ, अपने अतिथियों का, अनुदान एवं विज्ञापन दाताओं का, अलुम्नी के सभी पदाधिकारियों का, तथा स्मारिका के प्रकाशन में जुड़े रहे सभी साथियों का विशेष कर श्री नवल जायसवाल का जिन्होंने "नीड़" के सृजन में कला-बोध को साकार किया ।

डॉ. एल.पी. सिंह
को-ऑरडीनेटर स्मारिका

अलुम्नी का पहला कार्यक्रम और शीतकाल की बयार, दोनों एक साथ और एक ही मौसम में, आपके सामने हैं । शीतकाल की आदि बाहर की ओर होती है, चारों ओर । हम भी अपने इन्द्रधनुष के आस-पास मण्डराते रहते हैं, सबको स्वाद का गुर देने के लिए, अतीत चीजों की उत्पत्ति । हमारे अपने पास रंग हैं, मिलन के लिए, ऐसी चीजों का ऐसा ज्ञान जिसके पारस्परिक सम्बन्ध हैं । एक स्वर यह है, और यह दूसरा, उष्ण या शीत, कोमल या तेज, प्रत्येक एक दूसरे से भिन्न किन्तु उत्पत्ति का स्थान एक ही है – काष्ठ । मैं जिसकी कल्पना कर सकता हूँ, उसको पा भी जा सकता हूँ । मैं इस क्षण अपने भविष्य में पक्षी-गीत के समान किसी स्मृति या कोई कल्पना नहीं कर पा रहा हूँ केवल हम अपने रोगों के अर्थ तथा अर्थ के रोगों से दूर अपने घर आये हैं, अपनों से मिलने, पुराने साथियों से, एक मण्डप के नीचे, इन थोड़े से लम्हों का सदुपयोग करें । हँसें, गायें, बतियायें, किलकारी मारें और हँसी खुशी बिदा हों वापस फिर मिल जाने के लिये । मेरा परिवार आपसे मिले और आपका मेरे परिवार से । अपने भाव व्यक्त करें, भावात्मक भाव व्यवहारिक जीवन में महत्व रखते हैं ।

अनेक तात्पर्य हैं, अनेक अर्थ हैं, हम सब मानव हैं, भूल भी कर सकते हैं, अतः क्षमा के पात्र हैं ।

आभार व्यक्त करना हमारा दायित्व है ।

भानुप्रकाश दुबे
अध्यक्ष

Dear friends,

We have travelled a long way since the time we were coy "White Birds" gazing the third shirt buttons. Times have undergone sea changes, profession have follwed suit. Every one gets affected by changes, I suppose that is quite natural. Amongst all these turmoils and trepidations the bond that stood the test of time is a sense of belonging and of a common origin. We might have burgeoned in different directions and pursued different course but we do remain attached to our soil with common roots. Walking down the memory lane one's heart is filled with nostalgic reminiscences. We have to strive hard to keep this entourage as lively as possible. No exhortation and no rhetorics, let us celebrate our common bondage in joyful and cordial atmosphere befitting the occasion.

Dr. Narendra Gargava

Your Excellency, the Governor of our State, Hon'ble State Minister for Health and Family Welfare, Dr.Gauri Shankar Shejwar, Dean, Gandhi Medical College, distinguished guests and alumni of Gandhi Medical College.

I, on my own behalf as the Secretary of Alumni of Gandhi Medical College, Bhopal and on behalf of all the members of our association, welcome you here at the inauguration of the First Annual Conference of Alumni of Gandhi Medical College, Bhopal. It is a very proud moment for us as the head of the State is our Chief Guest on this occasion. His august presence lends grace to our Conference and ensures the longevity of Alumni of Gandhi Medical College, Bhopal.

It is a proud moment for one more reason. Hon'ble State Minister for Health and Family Welfare, Dr.Gaurishankar Shejwar, who is so kindly presiding over this function is an old student of Gandhi Medical College, Bhopal. So he belongs to us and his presence adds lustre to our feeble glow. To say anything else in his praise would amount to self-glorification.

I take this opportunity to relate in brief the story of the birth of our organisation and present in a nut-shell the aims and objectives that have led to the formation of Alumni of Gandhi Medical College, Bhopal.

I am glad to say that Gandhi Medical College, Bhopal, has completed nearly 37 years of its glorious existence. During this span of time the College has educated, trained and turned out a large number of doctors who are fighting against pain and human suffering in different parts of our country and the world. Quite a few of them have won laurels and several of them have been honoured for their excellent and selfless service to humanity.

It was the natural desire of a number of old students of Gandhi Medical College, Bhopal to form an Association of the old students of the College so that all the old students could be discovered and rediscovered and could be given opportunities to renew their relationship with the College and report to the college and the old friends what they have achieved and done in the various departments of medical faculty. The dream could be transformed into reality with the active co-operation of some young doctors and the patronising guidance of some senior old students who hold responsible position today.

The first meeting of some old students was held on 14th January 1990 under the Chairmanship of Dr.S.C.Jain. The next meeting was held on 9th February 1990, formally to spell out the aims and objectives of the Association. It was at this meeting that the draft constitution of the Association was provisionally adopted and the Association was given the name "Alumni of Gandhi Medical College, Bhopal". This newly formed Association was registered with Registrar of Firms and Societies, M.P. on 20th July 1990.

The first election of the office-bearers was held in September 1990 in accordance with the constitution of the Association and the following were elected unaniously :

President	Dr.B.P.Dubey
Vice-President	Dr.S.K.Saxena
	Dr.C.C.Chaubal
Secretary	Dr.A.K.Shrivastava
Jt.Secretary	Dr.G.D.Tiwari
Treasurer	Dr.B.G.Mahajan
Executive Members	Dr.L.P.Singh
	Dr.(Mrs.)S.Govila
	Dr.S.A.S.Kazmi
	Dr.N.A.Shah
	Dr.V.R.Sharma
Board Advisors	Dr.S.C.Jain
	Dr.B.M.Dhoot
	Dr.K.N.Sharma
	Dr.S.A.Ansari
	Dr.M.M.Gupta
	Dr.U.C.Tiwari
	Dr.S.S.Yeshikar
	Dr.P.Rajani
	Dr.H.H.Trivedi
	Dr.R.S.Verma

The General Body of the Association nominated Dr.N.D.Gargav as the Convenor of the Association in recognition of his pivotal role in the formation of the Association.

The intervening time has been a period of silent but useful activity. Discovering the whereabouts of old students and contacting them was an ardous task but the office-bearers performed it with evident zeal. By now we have enrolled 350 old students as life-members and have raised an amount of Rs.1,05,000/- as life membership fee. Many more old students are going to join us as life-members in this month and we are confident to achieve the target of total membership in the near future.

You will be delighted to know that the first name that we give the first function of our Association was "Beejaropan". Then we called it "Ankur" and now we propose to call it "Pallava". Such christening of the functions is indicative of the growth and development of the organisational wing of the association. We hope that flowering and fruition will follow in the natural course.

I declare to resolve of Alumni of Gandhi Medical College, Bhopal to unite and reunite and to reassemble the old students of Gandhi Medical College, Bhopal to revive and strengthen the bonds of enduring friendship, to provide opportunities for exchange of opinions and sharing of experiences, to highlight the distinguished services that are being rendered by the old students of this College and to honour those friends who stand out by virtue of their noble deeds. I humbly add that we are going to honour some old friends in this very function for their extra-ordinary achievements in different fields.

Hon'ble Chief Guest, I assure you that the members of our Association will continue to render sincere service to our fellow-men and by study and interaction, grow in knowledge and experience. It is our sincere desire that when we have played our innings and are retiring from the field our Alma Mater could bless us thus :

"Of Soft manners, unaffected mind,
Lover of peace, and friend of human kind;
Go, live! for heaven's eternal year is thine,
Go, and exalt thy mortel to divine."

If we are really able to play our roles with perfect humility and serve the human kind with sincere devotion, we shall deserve the blessings of the college that has given us knowledge and skill to serve our fellow-men.

With this hope I thank you for your patient hearing.

Dr.A.K.Shrivastava

Secretary,
Alumni,
Gandhi Medical College,
Bhopal.

STUDENT ASSOCIATION

GANDHI MEDICAL COLLEGE, BHOPAL

Year - 1963

1. President — P.N.Shukla
2. Sports Secretary — S.P.Agrawal
3. Fine Arts Society — V.K.Agnihotri
4. Literary Society — Chandra Sekaran

Year - 1966-67

1. President — Anand Tamhankar

Year - 1967-68

1. President — R.K.Sharma
2. Vice-President — M.K.Jain
3. Jt.Gen.Secretary — Dilip Wipat

Year - 1969-70

1. President — K.D.Dargar
2. Vice-President — D.C.Sharma
3. Jt.Secretary — N.K.Shah
4. Girls' Representative — Shashi Prabha Gupta

Year - 1970-71

1. President — S.H.K.Halla
2. Jt.Gen.Secretary — C.P.Sharma
3. Girls' Representative — Ku.K.Fatima Khan

Year - 1974

1. President — M.N.Trivedi
2. Vice-President — A.K.Kumar
3. Gen.Secretary — Naveeb Singh
4. Jt.Gen.Secretary — M.L.Badkur

Year - 1975

1. President — C.G.Chaubal
2. Vice-President — Ku.Raksha Sharma
3. Gen.Secretary — Yogesh Mehrotra
4. Jt.Gen.Secretary — Sharad C.Mishra
5. Girls' Representative — Ku.Reela Sahi

Year 1977

1. President — Dinesh K.Bhatnagar
2. Vice-President — Pradeep K.Tiwari
3. Gen.Secretary — Suresh K.D.Jain
4. Jt.Gen.Secretary — Madan Mohan Bahadur
5. Girls' Representative — Ku.Ramajit Kaur

Year 1978

1. President — Suresh K.D.Jain
2. Vice-President — Amarjot Singh Narula
3. Gen.Secretary — Shiv K.Sharma
4. Jt.Gen.Secretary — Pramod K.Jaiswal
5. Girls' Representative — Ku.Vaijayanti Joshi

Year - 1979

1. President — Shiv Sharma
2. Vice-President — G.S.Patel
3. Gen.Secretary — Ashok K. Shrivastava
4. Jt.Gen.Secretary — Vivek Gole
5. Girls' Representative — Sanjeet Verma

Year 1980

1. President — Arvind R. Joshi
2. Vice-President — Pradeep Chowdhary
3. Gen.Secretary — Aizaz Ahmed Yusuf Gai
4. Jt.Gen.Secretary — N.Biji Mathew
5. Girls' Representative — Ku.Anita Kanwar

Year 1981

1. President — Dinesh K.Kamthal
2. Vice-President — Shambhu Sharan Singh
3. Gen.Secretary — Shrikant Jain
4. Jt.Secretary — Rajendra K.Cherian
5. Girls' Representative — Ku.Jai Laxmi Naidu

Year - 1982

1. President — Anup Bhaumik
2. Vice-President — Brijesh Shrivastava
3. Gen.Secretary — 1.Abhay Manchanda
2.Kapil Vohra
4. Jt.Secretary — Shyam S.Agrawal
5. Girls' Representative — Ku.Anita Verma

Year 1983

1. President — Ravikant Kamle
2. Vice-President — Prakash Tripathi
3. Gen.Secretary — Akhilesh K.Deshpande
4. Jt.Gen.Secretary — 1.Kamlesh Deopujari
2.Maheep Singh Gaur
5. Girls' Representative — Ku.R.Vasanthi

Year - 1984

1. President — Rajeev Gupta
2. Vice-President — Ajay K.Khare
3. Gen.Secretary — Sunil K.Pal
4. Jt.Gen.Secretary — Abbas Ali Bombaywala
5. Girls' Representative — Ku.G.Garg

Year - 1985

1. President — Dilip K. Ratnani
2. Vice-President — Om Prakash Bansal
3. Gen.Secretary — Mahesh K.Navani
4. Jt.Gen.Secretary — Sunil K.Jain
5. Girls' Representative

Year - 1986

1. President — Ku.Dolly Chandra
2. Vice-President — Shashank Agrawala
3. Gen.Secretary — Rakesh Rai Sapra
4. Jt.Gen.Secretary — Rajneesh Jain

Year - 1987

1. President — Ku.Jyoti Tulsani
2. Vice-President — Maneesh Jain
3. Gen.Secretary — Ku.Kalpana Kulshrestha
4. Jt.Gen.Secretary — Ku.Manjusha Agarwal

Year - 1988

1. President — Amit Sood
2. Vice-President — Pankaj Shukla
3. Gen.Secretary — Randhir Singh
4. Jt.Gen.Secretary — Ashwini Kaushik
5. Girls' Representative — Ku.Deblina Bhattacharya

Year - 1990

1. President — Randhir Singh
2. Vice-President — Amit Trivedi
3. Gen.Secretary — Ku.Monika Jindal

1. Registration & Protocol Committee

Chairman	Dr H.H.Trivedi
Co-Chairman	Dr Shambhu Dayal Sharma
Convenor	Dr Yogesh Mehrotra
Members	Dr B.D.Mahajan
	Dr Mahesh Shukla
	DR.R.K.Gupta
	Dr Sanjaya Dadu
	Dr J.P.Chowdhary

2. Souvenir Committee

Chairman	Dr S.Yavkar
Co-Chairman	Dr R.S.Verma
Convenor	Dr Chandra Has Sharma
Members	Dr P.K.Rai
	Dr L.P.Singh
	Dr S.A.S.Kazmi
	Dr Padam Kumar Jain
	Dr Brijendra Misra

3. Finance Committee

Chairman	Dr S.C.Jain
Co-Chairman	Dr P.Rajani
Convenor	Dr C.S.Sacdeva
Members	Dr C.D.Dwani
	Dr R.K.Jain
	Dr N.A.Shah
	Dr A.M.Latif
	Dr P.K.Jain
	Dr Dinesh Mukhariya

4. Entertainment Committee

Chairman	Dr M.M.Gupta
Co-Chairman	Dr K.N.Bhatnagar
Convenor	Dr H.H.Trivedi
Members	Dr Salil Kumar
	Dr Shrinath Agrawal
	Dr H.Dalal
	Dr U.M.Sharma
	Dr Pradeep Chopra
	Dr Ajay Mehta

5. Scientific Committee

Chairman	Dr U.C.Trivedi
Co-Chairman	Dr M.S.Meena
Convenor	Dr P.C.Manoria
Members	Dr Subhash Zakaria
	Dr M.M.Nanda
	Dr V.K.Trichal
	Dr Ashok Shrivastava
	Dr P.S.Bindra
	Dr Mukul Gulati

6. Catering Committee

Chairman	Dr P.Rajani
Co-Chairman	Dr I.A.Qureshi
Convenor	Dr K.C.Kimati
Members	Dr (Mrs.)G.D.Jain
	Dr (Mrs.)Q.Khan
	Dr V.K.Pagare
	Dr S.L.Patidar
	Dr D.K.Satpathy
	Dr D.S.Badkur
	Dr I.K.Chugh
	Dr Dhananjay Sharma
	Dr (Mrs.)Renu Malla

7. Accommodation Committee

Chairman	Dr K.N.Sharma
Co-Chairman	Dr V.D.Bhale
Convenor	Dr V.M.Agnihotri
Members	Dr Y.Baluapuri
	Dr D.K.Bansal
	Dr K.K.Agrawal
	Dr J.S.Ubeja
	Dr Vivek Sahani

8. Decoration Committee

Chairman	Dr H.H.Trivedi
Co-Chairman	Dr S.S.Sisodia
Convenor	Dr S.K.Govila
Members	Dr (Mrs.)Vineeta Jain
	Dr C.C.Agrawal
	Dr Ashok Jain
	Dr R.B.Dubey
	Dr R.K.Gupta
	Dr Rajeev Gupta
	Dr Rajnish Jain

9. Transport & Reservation Committee

Chairman	Dr S.A.Ansari
Co-Chairman	Dr G.P.Saxena
Convenor	Dr P.K.Shrivastava
Members	Dr Vijay Saxena
	Dr Faiyaz Shariff
	Dr Madan Kalyani
	Dr Lalit Shrivastava

10. Ladies Committee

Chairman	Dr (Mrs.)C.Ghosi
Co-Chairman	Dr (Mrs.)R.Shariff
Convenor	Dr (Mrs.)B.Bisariya Gupta
Members	Dr (Miss)P.Sahai
	Dr (Mrs.)Veena Khare
	Dr (Mrs.)K.F.Kazmi
	Dr (Mrs.)Tripta Khanna
	Dr (Mrs.)Chitra Murthy
	Dr (Mrs.)K.M.Bakshi
	Dr (Mrs.)R.Nanda
	Dr Mrs.)Nisha Shrivastava
	Dr (Mrs.)Sarla Jain

नीड़

THE LEADERS

GMC was fortunate so have the blessings and care of following Principals and Deans during its formative years :

Dr.S.C.Sinha	Principal	1955-1956
Dr.G.Krishna	-do-	1956-1957
Dr.R.P.Singh	-do-	1958-1963
Dr.Narendra Singh	Dean	1964-1966
Dr.S.M.Misra	-do-	1967-1971
Dr.M.Kumar	-do-	1971-1972
Dr.S.M.Misra	-do-	1973-1975
Dr.S.S.Gupta	-do-	1975-1978
Dr.Santokh Singh	-do-	1979-1981
Dr.R.P.Bhargava	-do-	1981-1984
Dr. B.B.L.Mathur	-do-	1984-1985
Dr.O.P.Sharma	-do-	1985-1988
Dr.V.K.Agrawal	-do-	1988-1989
Dr.S.Bose	-do-	1989-1991
Dr.N.P.Misra	-do-	1991-1992
Dr.O.P.Sharma	-do-	1992 - continued

We are grateful to the donors :

Dr. C.P.Dewani
Dr.H.H.Trivedi
Niramaya Hospital
Ayushman Hospital
Padode Nursing Home
Batra Hospital
Gurudatta Urology
Organising Secretary, Urology Congress
New Bhopal Hospital
Nirmal Nursing Home
Prabha Nursing Home
Dr. Yogesh Mehrotra
Manju Ortho Centre
Veenus Opthalmic Centre
Veenus Pathology
Shanti Nursing Home
Mayo Hospital
Sharad Nursing Home
Carewel Hospital
Sajjad Nursing Home

अहम् ब्रह्मास्मि

मैं, मैं हूँ
तुम
तुम नहीं हो
क्योंकि तुम्हारे चेहरे का
उतरा हुआ मास्क
खिचड़ी से उलझे बाल
दबे से पीले-पीले गाल
और
चारमीनार के धुएँ से
पीली पड़ी उंगलियाँ
और काले-काले ओंठ
स्वयं में एक कहानी कहते हैं,
कि तुम, तुम नहीं रहे
टखनों से ऊपर उठी, 12 इंच
मोहरी की, ढीली और लम्बी पेन्ट
पहनकर,
तुमने तो पहले
रिक्शे स्टैण्डों पर, फिल्म टिकिट लिये,
आती जाती लड़कियों को
घूरने का व्यवसाय नहीं किया था
तुम्हारी आंखों की वो सुर्खी थी
और एक तुम
सच को सच और झूठ
को झूठ कह दिया करते थे
तुम्हारे ओठों की वह मुस्कान
थी भी न थी
व्यापक हँसी हँसा करते थे
"[illegible]" कहकर
पत्थर से पिचकारी मारते
जाते थे और
जो अब पकड़े जाने पर
एक फीकी हँसी हँसा
करते हैं
तुम्हारे जो न थे
मैंने जब तुमको देखा था
असत्य, अशिव को देख
कम्पन कर जाते थे
तुम्हारी वे आंखें भी जो
आग बरसाती थीं
हां, पानी भी बरसाते थे
इन नजरों ने
जब तुमने किसी अबला को
सिसकते और
मनु के किसी बेटे को
भूख से तड़पता देखा था
और अब, अब तो
तुम्हारी इन आंखों में, स्वयं
भूख की एक परछाईं है
आग, वह भूख
अमानुष, पौरुषत्व से
उठकर, ऊपर आई है
तो काट दो
इन आंखों को, पानी को
जिसने सब कुछ
तुमसे तुम्हारा छीन लिया
तुम भूल गये
तुम सत्य हो, शिव हो, सुन्दर हो
तुम भूल गये
तुम कहा करते थे
अहम् ब्रह्मास्मि
अहम् ब्रह्मास्मि
अहम् ब्रह्मास्मि

डॉ. ए. आर. टान्ना, रायपुर

साभार
पत्रिका : गांधी मेडिकल कॉलेज : नवम्बर 1963

हास्य एवं व्यंग

"सारी"

मत पूछिये अब आप हमको, क्या है पश्चिम ने दिया,
अंग्रेजियत का शुक्र है जिसने बड़ा अहसां किया ।
पूजन में भगवान के होता था बरबाद वक्त,
जो अंग्रेज ने इंगलिश सिखाई हमने सारी कह दिया ।

अशोक सिंघई

"सर्विस"

दुनिया में कैसी हवा चल रही है,
कलम और हुनर की चिता जल रही है ।
आजकल की सर्विस पी गये सिफारिश,
खुशामद की उंगली पकड़ चल रही है ।

श्यामनारायण श्रीवास्तव

"जुलाई"

जुलाई में कितनी तपन है,
किताब में कितनी घुटन है ।
यह बतायेंगे तुम्हें वे –
घट गया जिनका वजन है ।।

महेश वशिष्ठ

"पिक्चर"

उनसे मुझसे जब कहा पिक्चर दिखाने के लिये,
मैंने उनसे अर्ज की मंदिर में जाने के लिये ।
बोले साहब चुप रहो, मशवरा न दो मुझे,
मंदिर में कौन जायेगा जूते गंवाने के लिये ।।

रमेश दुबे

"प्राकृतिक चिकित्सा"

स्वास्थ्य के लिये है ये दवा का यह अस्पताल,
रोगियों के लिये जो अनोखी रसशाला है,
आराम है दवा यहां भस्म है भोजन सभी,
फलों में सारे विटामिन को घोल डाला है ।
चले चलो, चले चलो, जीवन को ठीक करो,
मानो "वाक-वाक" ही यहां का मंत्र आला है,
सुषमा संजीवनी है, दृश्य इन्जेक्शन महा,
सूरज की किरणों में टॉनिक निराला है ।

नित्यानंद शर्मा

स्मारक
गांधी मेडिकल कॉलेज पत्रिका जनवरी 1974

एक चिड़िया समाजवाद की
उड़ी
गांधी वादी वृक्ष से
सब कुर्सी वाले देख रहे हैं
चिड़िया के उड़ने का लुत्फ ले रहे हैं,
उड़ने से डर नहीं चिड़िया के
सभी शिकारी भाई के
सभी कुर्सी वादियों के निशाने
एक साथ पड़े,
और वह चिड़िया
एक ही क्षण में
ज़मीन पर आ गई
तड़पी और शांत हो गई।

हुकमचंद जैन
अंतिम वर्ष

धारा और पत्थर

सुभाष गुप्ता

निर्झर की धारा के आगे एक पत्थर आकर बैठ गया। [illegible]

कुछ काल के पश्चात् [illegible]

एक बूढ़े ने हमें एक समझ दिखाया, बोला,
"बैठो, ये नोट है अजीब,
कभी तूफान कभी ठोस"
इसका था सवाल
दिमाग का मेरा दौड़ना
एक हल समझ में आया
"और यही भी बुनियाद का है खेल
तितली जब बहार लाती है
और फिर तूफान आते हैं
फिर पत्थर संतुलन हो गए
फिर अपनी पर आ जाते हैं
तितलियाँ पर छा जाते हैं"
कुछ संतुष्ट हो गया।
बहार आज का हो गया।

डॉ. राकेश अग्रवाल

जिन्दगी की तलाश

डॉ.साधना दुबे
आन्तरिक चिकित्सक

कोहरे से ढके रास्ते पर कभी
तो चटकीली धूप के तले कभी,
हंस हंस कर कभी और उदास हो कर भी
हर ढंग से जिन्दगी को ढूंढ के देख लिया।
कहां मिलेगी मुझको मेरी वो अज़ीज़,
हूँ बेभावी राहों के आने जाने से तंग हूँ,
कोहरे की पहाड़ी पर भी देखो,
जगह जगह रोशनियों के तारे टंग गए,
सावनी झील में भी तितली की परछाइयाँ हैं
मगर कहीं भी मेरी जिन्दगी नहीं मिलती
या तुम्हारी हंसी में मिलती है,
या मेरी उदासियों में मिलती है।

आक्रोश

मिट्टी की आग क्रोध से धधक रही थी। सुहाग के पानी पीने के लिये उठते ही चीमनी पर भड़क उठी "अरे ढोंग के मारे पास से क्यों बेजान निर्जीव चीमनी, हटजा मेरे पास से। तेरी यह बदबू और तेरा यह गन्दापन मुझसे नहीं सहा जाता"।

चीमनी न डरी, न झीपी, न झल्लाई। एक उदास-उदास सी मुस्कराहट अपने चेहरे पर लाकर बहुत ही बूढ़े बूढ़े स्वर में उसने कहा - बहन, मैं बेजान सही, निर्जीव सही, पर तुम्हारे शरीर में जो प्राण है, तुम्हारी लाल लाल लपटों की जो चमक स्फूर्ति है - वह मेरी ही बदौलत है।

सुनीता मिश्रा
अंतिम वर्ष

आवेश के क्षण

कमल के पत्ते पर चमकते हुये ओस बिन्दु ने अपने रूप का अभिमान करते हुए कहा -"देखो रूप, कितना सुन्दर। मोतियों को भी लज्जित करता है।"

कमल के पत्ते ने इस डर से, कि कहीं इन आवेश के क्षणों में वे ढुलक कर नष्ट न हो जाएं, कांपते हुए ओसों को सहसा रोक लिया और उसकी इस चपलता का कोई उत्तर नहीं दिया।

कु.रज़िया कस्तूरी
तृतीय वर्ष

एक बार अकबर ने
कहा बीरबल से -
"एक हवाई महल बनवाओ"
बीरबल ने तोते पाले,
और उन्हें पढ़ाया -
"ईंट लाओ गारा लाओ,
ईंट लाओ गारा लाओ।
बस देखा देखी
एक गांधी ने सिखाया तो बाकी
तोते आज तक चिल्लाते हैं -
समाजवाद लाओ, समाजवाद लाओ।

बृजेन्द्र मिश्र
तृतीय वर्ष

फिर से हवेली आयी
फिर से ओढ़ जायेंगे।
दिल देंगे फिर, तुम्हीं को,
फिर से चोट खायेंगे।
हम रूठ के चले हैं,
मगर आरज़ू है ये।
एक बार फिर पुकार लो,
हम लौट आयेंगे।

डॉ.जगदीश तिवारी

Doctor, My Husband Thinks He 's A—

By Sawhney

3rd yr.

Doctor, my husband thinks he's a horse.

I think I can cure him, but it's going to be costly.

Money is no problem. He just won the Kentucky Derby!

Doctor, my husband thinks he's a lawn mower.

That's not so bad. I can cure him of that.

Please hurry. I'm tired of loaning him to the neighbours!

Doctor my husband thinks he's a hen.

How long has this being going on?

About five years.

Why haven't you brought him in sooner?

Well, to tell you the truth, up to now we needed the eggs!

[illegible]

[illegible]

[illegible]

Milestones of Development in a First Year student

G.D.K.Nigam

Ist yr.

Admission
on 1st day
Fear and smile disappear
within 2 days
Hold Head down
within 1 week
Loss of argument power
(misfortunes never come singly)
within 2 weeks
Peacock position
within 3 weeks
Turns head towards seniors
within 1 month
Walk quickly
within 2 months
Entrance in college with dare
within 3 months
Smile reappears
within 4 months
To make castles in the air
within 7 months
Union in strength
within 8 months
In coffee house with girls
within 1 year
Becomes senior
within one and half year

Came you dancing down
with music kissing your gown
Light as a breeze, through the trees flowing
Birds in their nests singing a hymn
With your movements blending
One with another in a beautiful rythm
This is how I saw you my Love sweet
When for the first time did we meet.

Abridged from Message Javed Akhtar.

पुष्प - 77 - 78

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

डा. संजीव वर्मा

सफर

[illegible]

संजय श्रीवास्तव

[illegible]

सुख की क्षणभंगुरता

तात्कालिक कविता में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त

कभी किसी दिन
मैंने सुख को छू कर देखा
बहुत मृदुल था बिलकुल कोमल
और सुंदर मनोहर उसकी
मोहित होकर लगने ही लगा, समझा,
[illegible]
सुख है आसमान का तारा,
और यहीं धरती पर मैं हूँ
शायद सुना कभी सुना हो –
यह धरती और आसमान जब मिलने की कोशिश करते हैं
वहीं सूरज होने लगती है,
यही सोचकर चुप रह बैठा,
ऐसे सुख से लाभ नहीं
जो औरों को पीड़ा पहुँचाये
तभी एक दिन मैंने पाया,
सुख तो मेरे पास खड़ा है,
[illegible]
अपनी बाहें फैला करके उसे छिपाया,
किन्तु [illegible]
कितने दिन तक छिप पाता है, कब पाता है ?
कभी कहीं पर, कोई आकर,
छीन ले गया उस मोती को,
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
किन्तु मुसाफिर, जिसका उसको इंतजार था
कभी भटक कर फिर न आया.
कभी कभी मैं सोचा है
सुख तो कोई ऐसी-वैसी चीज नहीं है,
शायद सुख औरों को ठंडक पहुँचाता है.
जैसी पेड़ों की हरियाली,
किन्तु पेड़ों की हरियाली तो
अपने हाथों में लेने हो
सुरक्षा जाती हो जाती है,
और तू बने कोई पेड़, और भी अच्छा, सबसे अच्छा,
आगे ही बढ़ता जाता हूँ
और तभी यह हरी पत्तियाँ
खुद मेरे हाथों में गिरतीं,
मेरे मन को खुश करती हैं,
किन्तु अरे यह तो मुरझाईं, सूखी सी
यह क्या हालत यह तो पतझड़ ही आता है
और दुःखी सा, मैं निराश सा
खड़े खड़े सोच रहा हूँ
कैसे सुख से मैं पूछूँ –,
तुम कैसे हो ? कैसे दिखते हो ?
क्या है छिपा तुम्हारे अंदर ......
बहुत कठिन सा लगता है, अब कहीं करना
कभी एक दो क्षण से ज्यादा साथ नहीं रह पाता जिसके,
कैसे पूछूँ उससे कुछ मैं,
कैसे उससे बात बढ़ाऊँ
समझ नहीं पाता हूँ कुछ भी
यही सोचकर रह जाता हूँ
सुख है कोई बहती धारा
जिसको हाथ से छू कर ही तो रह जाते हैं,
और पकड़ना जिसको हम सब मुश्किल पाते.

प्रमोद जायसवाल

द्वितीय वर्ष

क्या केवल मानव का क्रंदन कविता है,
या फिर जीवन का उद्गार कविता है,
या फिर भावनाओं की उलझन कविता,
या कुछ अर्थों का निर्बोध्य कविता है,
क्या केवल क्रांति का गुंजन है कविता,
या फिर विरह वेदना का वर्णन कविता है,
है क्या काल्पनिक उड़ानों का संबल कविता,
या फिर वास्तविकता की अतिशयोक्ति कविता है,
क्या अलंकारों का मानवीयकरण कविता है
या मानव का अलंकरण कविता है
नहीं–नहीं, हो सकता है कुछ ये भी पर शायद,
मानव द्वारा मानव का चित्रण कविता है.

मुकेश अग्रवाल

Ins and Outs of Cricket

Cricket is quite simple.

You have two sides - ours and theirs. One out in the field and one in. Each man in the side that is in, goes out, and when he is out, he comes in, and the next man goes in until he is out.

Then when they have all been in and all are out, the side that has been out in the field comes in, and the side that has been in goes out, and tries to get out those coming in.

Sometimes there are men still in and not out.

Then when both sides have been in and out, including not outs that is the end of the game.

It is really very simply although sometimes it leaves people stumped.

Mukul Gulati

......And once again he is taken back to his beautiful college days. Regular classes and clinics during the day time. Evenings were spent along with so many friends, either on playgrounds, or clubs or cinemas or markets. And after all was the major part of his routine – his studies. Those huge volumes on his table were not mere show-pieces. He had burnt mid-night lamps and toiled hard to gain the knowledge, the skill and the technical superiority to consecrate his life to the service of mankind. He thinks of his could be status and luxurious and comfortable life of a doctor, that he once imagined. But all his ambitions are shattered like a house of cards. All his efforts are in vain. Gone are those days, and with that all his ideals of serving the humanity are strangulated. No one ever dreamt that doctors also had to work in situations like he is put to. He consoles himself/what else is left with him?/ by thinking that the past always seems better when you look back on it, and the present never looks as good as it will in the future. He recollects having once read somewhere I'd trade all my tomorrows for a single yesterday......

......But yesterdays are gone spinning ever farther away down a shaft, that had no bottom. None of the pleasures, none of the delight, none of the richness could ever be retrieved.

The villagers, he now realises, being illiterate are very difficult to handle. He never knew that the simple looking villagers could be so crooked as they are orthodox, narrow minded.... They have more faith in the village quack, whom always paid a visit prior to him. And that quack is cunning enough to passify the innocent villager. He is well versed with the art of tackling them.

The Government should have sent experienced senior doctor here instead of me,he thinks.One out of ten like me can have the capability to deal with such people, but one out of ten old ones may not possess this skill. The Government is doing an injustice towards the neonate doctors.

As the fading sweet memories sweep past his mind, he thinks of his several friends, who are sent to such remote places. He too, is one of them...

Stiff and weary, he rises up from his bed and strolls upto the window. Clipping a cigarette between his lips, he lights it and takes in a deep puff. Across the window he sees nothing in the depths of darkness.

By : Arvind Joshi

Abridged from ' A Dusk at Dawn '

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

एस.किशोर कुमार

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

The poet has no fear of death. In one of his songs he expressed his desire :

At the time of parting wish me good luck my friends.
The sky is lushed with dawn,
And my path lies beautiful.
Ask not what I have to take there,
I start on my journey with
Empty hands and expectant heart.
Because I love this life, I know,
I shall love the death as well .
Oh Death, you are my Lord Krishna
Maran re Tuhu mum Shyam Saman

Death is as beautiful to him as Lord Krishna. In one of his songs he says :

When I shall not be here,
When my foot-prints will not be here,
You need not call me as one lost.
Iwill exist on Earth,
I will inspire you.

By Dr.Sujata Gupta

Deptt. of Pharmacology

From : The beauty of Songs of Kaviguru Rabindra Nath Tagore.

[illegible]
Crest - 1978-79
[illegible]

LOVE IS

for a SURGEON
an inoperable thing
for a CARDIOLOGIST
a thrill which can be heard as a murmur/rumor!
for a GYNAECOLOGIST
a rare phenomenon
for an OPTHALMOGIST
a common cause of conjuctivitis
for a RADIOLOGIST
N.A.D
for an OBSTETRICIAN
we deliver the complication.
for a PAEDIATRICIAN
we treat the complication
for an E.N.T. specialist
a foreign body
for a PHYSICIAN
holding wrist without counting the pulse
for a VENEROLOGIST
L.A.-24
for a PHARMACOLOGIST
an ancient drug with severe toxicity
for a PATHOLOGIST
sterile on culture
for a FORENSIC EXPERT
an autopsy finding
for a P.S.M. worker
a highly communicable disease for which there is no vaccine.
for a PHYSIOLOGIST
fifth sound of heart
for an ANATOMIST
cannot be preserved in formalin.

Pankaj Shukla

रैगिंग कितनी उचित, कितनी अनुचित

[illegible]

डा. [illegible] शर्मा

[illegible]

डा. के.सी. [illegible]

[illegible]

श्रीमती [illegible]

[illegible]

कु. [illegible] मुखर्जी

[illegible]

[illegible]

[illegible]

He contests, supports, canvasses or eve-teases, never to become famous love heart or to satisfy a deep creative urge but purely for his own amusement. He is indefatigable. He is versatile a one-man orchestra. He is a pleasant company. His credentials are high spirits and a perpetual smile. He is the typical PHALTA.

SOM SHEKHAR VELURI

He is a fast – growing organization in G.M.C. – the chauvinist prefers to call it the PHALTA CULT · Ed.

गज़ल

शेख अहमद [illegible]

अगर मेरे सजदे दिखाने लगे हैं,
पत्थर के दिल भी पिघलने लगे हैं ।
जिन्हें देखना तक गवारा नहीं था,
वही आँखें राहों में बिछाने लगे हैं ।
मेरी जान लेकर अब क्या है इरादा,
पहले से ज्यादा वो संवरने लगे हैं ।
ये नई बात आई है उनको कहां से,
मेरा ज़िक्र आते ही लजाने लगे हैं ।
मेरा नाम लब पे भी लाते नहीं थे,
इशारों से मुझको बताने लगे हैं ।

चेहरा जिस क्षण देखा

व्रज भूषण मिश्र

जीवन का मधुमास देखा
[illegible]
तेरा चेहरा जिस क्षण देखा ।

अफसोस

मेरा तू जानकर अनजान होना [illegible],
कभी कुछ रिश्ते के होने का भी अफसोस होता है ।
भटक जाता है मन अक्सर तेरी यादों के जंगल में,
इस आवारगी पे हर बार सिर्फ अफसोस होता है ।
[illegible]
[illegible] क्या अफसोस होता है ।
[illegible] है, शीशे से टूट जायेगा,
टुकड़े इसके होने का [illegible] अफसोस होता है ।

[illegible] बिहारी [illegible]

एक नज़र इधर भी

अभी कल की ही तो बात है । एक साल भी नहीं बीता मेरा दाखिला एक अच्छे प्रोफेशनल कालेज में हुआ । [illegible]

और आज, जबकि हमारे जूनियर बैच को आये दो तीन दिन ही हुये थे हमारे सीनियर्स ने हमको खूब अच्छी मात्रा में प्रसाद बाँटा, चुपचाप पिटा पिटाया चेहरा लेकर घर पहुँचे । दूसरे दिन कालेज आये तो पता चला प्रथम वर्ष के छात्र काफी स्मार्ट हैं, क्योंकि एक दिन पहले ही वह झूठी रिपोर्ट आफिस में रैगिंग के बाबत कर चुके थे, फलस्वरूप डीन साहब का सर्कुलर हमारे हाथ में था, चेतावनी सहित कि यदि ऐसा दुबारा हुआ तो रेस्टीकेट कर देंगे ।

अगले साल फिर मिलने की ख्वाहिश में ।

"निराश"

[illegible] 1981-82
[illegible]

NOSTALGIA

Jayashree Bhave

The spring has left:
The smell of
sweat and acute discouragement
prevails
in these hot summer
afternoons.
While the eyes gaze out
at the endless panorama
of Gulmohars
lining the parched lanes
which merge with
the cloudless sky,
the pensive mind
looks back with agony
To a green and gold youth !

A MEMORY

Sanjay Dhar

Clearly I remmber
The First Kiss
Virgin Lips
On Virgin Lips
Cold nose
Touching my cheeck
Startled, broke away,
Couldn t find a thing to say
Clearly I remember
The First Kiss
But cannot remember
The Miss.